(1)

Lecture N. (09)

Name of the College - APSM College, Barauni, Begusarai
(L.N.M.U, Darbhanga)
Name - Dr. Bharti Kumari (AIH&C
Lession / plan for class - B.A (H), part-1, paper-1
Date - 13-04-2021
Name of the Topic - publicity measure of Ashok Dhamm.

## अशोक धम्म के प्रचार के उपाय :-

अशोक महान धर्मोपदेशक ही नही, बल्कि बहुत बड़ा धर्म प्रचारक भी था। उसने अपने धम्म के प्रचार के लिए अनेक उपाय किये। अपने सातवें स्तंभ लेख में उसने स्वंय इसका जिक्र किया है। इसके लिए उसने धर्म श्रवण (धार्मिक घोषणाएँ) धर्म स्तंभो का निर्माण एवं धर्ममहापात्र की नियुक्ति की। इसके अतिरिक्त उसने लोक कल्याणकारी कार्य भी किये। माता-पिता की सेवा, दासो एवं भृत्यो के प्रति सम्यक् व्यवहार की नीति अपनायी एवं धर्म यात्रा प्रारंभ की।

(a) धर्म श्रवण (धार्मिक घोषणाएँ) अपने धर्म-प्रचार के सन्दर्भ में अशोक ने प्रथम स्थान धर्म श्रवण को दिया। यह घोषणा राजकर्मचारियों एवं जन-साधारण दोनों के ही मध्य करवायी गयी। इसके लिए पुरुषों एवं राजुको को आवश्यक निर्देश दिए गये। तृतीय शिलालेख में अशोक ने यह भी आज्ञा दी कि उसके साम्राज्य में सर्वत्र युक्त रजुक भी प्रादेशिक - पाँच - पाँच वर्षो पर धर्मानुशासन के लिए निकले। इस धर्मानुशासन के लिए अशोक ने दो उपाय किये - धर्मस्तम्भों की स्थापना

P.T.O.

एवं धर्ममहामात्रों की नियुक्ति।

(b) धर्म-लेख खुदवाना → अशोक ने अपने साम्राज्य की समस्त शक्ति धर्म प्रचार में लगा दी। अपने राज्य में उसने सरल तथा सर्वमान्य नियमों को चट्टानों तथा स्तंभों पर खुदवाया। साम्राज्य के सुदूर भागों में स्थायी शिलाओं पर सर्वसाधारण की भाषा में धर्म नियम खोदे गये जिससे उन्हें पढ़ सके और अपने जीवन को उनके अनुकूल ढाल सके। समीपवर्ती प्रान्तों में सुन्दर स्तंभों पर ये धर्मलेख खोदे गए। अशोक की मृत्यु हुए आज लगभग सवा दो हजार वर्ष बीत चुके हैं। किन्तु उसके शिलालेख तथा स्तंभ लेख तथा गुफा लेख आज भी उसी प्रकार विद्यमान हैं और उसकी कीर्ति को फैला रहे हैं।

(c) धर्म-महामात्यों की नियुक्ति → धर्म-प्रचार के लिए अशोक ने एक और मौलिक कार्य किया। यह था अपने राज्याभिषेक के तेरहवें वर्ष में धर्म-महामात्रों की नियुक्ति। धार्मिक क्षेत्र में इनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। अशोक ने अपने सातवें स्तंभ लेख में इन्हीं उनके कार्यों का उल्लेख किया है।

(d) धर्म के अनुरूप जीवन बनाना :— अशोक ने अपने व्यक्तिगत जीवन को भी धर्मानुकूल बना लिया। अपने जीवन को उसने जनता के लिए उदाहरणस्वरूप रखा। पहले राजकीय भोजनालय में सैकड़ों पशुओं का मांस पकाया

P.T.O.

③

लेकिन जब सम्राट ने अपने धर्म के अनुसार आचरण करके जन-साधारण के समक्ष आदर्श उपस्थित किया। अशोक ने मांस का त्याग किया राजकीय रसोई में मांस का पकना निषिद्ध कर दिया गया। अपने विहार यात्रा यानी (सैर) और अन्य हिंसापूर्ण कार्यों को कानून बनाकर करवा दिया। अशोक ने अपने सम्पूर्ण साम्राज्य की प्रजा को अहिंसा धर्म का पालन करने के लिए प्रेरित किया।

(e) दान → धर्म-प्रचार में अशोक की दान व्यवस्था अधिक सहायक सिद्ध हुआ। धार्मिक संस्थाओं को स्वयं दान देने के साथ-साथ अपने परिवार के सदस्यों से भी दान दिलाता था।

(f) मठों का निर्माण → अशोक ने धर्म प्रचार के लिए जगह-जगह मठों का निर्माण करवाया, ताकि धर्म प्रचारकों को किसी तरह की कठिनाई नहीं हो और उनका प्रचार-प्रसार कार्य हर क्षेत्र में सुविधापूर्वक हो।

(g) कल्याणकारी कार्यों को धर्म प्रचार का माध्यम बनाना :—

सम्राट अशोक ने जनता तथा पशु-पक्षियों की चिकित्सा के लिए साम्राज्य के भीतर ही नहीं वरन विदेशों तक में औषधालय स्थापित किए और उनके लिए जड़ी-बूटियों का उद्यान लगवायें।

(H) नाटकों द्वारा प्रचार :— धर्म के प्रचार के लिए अशोक ने कई प्रकार के नये सामाजिक समारोहों का आयोजन किया। सम्राट ने इन उत्सवों के उत्थान पर नये प्रकार के आमोद-प्रमोदों का आयोजन करवाया। राज्य की ओर से धर्म-श्रवण की व्यवस्था की गई जिसमें धार्मिक विषयों पर भाषण, कथा आदि होते थे जिनका असर जनता पर काफी अच्छा पड़ता था।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(I) विदेशों में धर्म-प्रचार करना :— भारत में ही नहीं बल्कि भारत के बाहर भी अशोक ने धर्म विजय का आयोजन किया। अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र-पुत्री संघमित्रा को सिंहल द्वीप (श्रीलंका) भेजा था। वहाँ के राजा तिस्सा ने उन दोनों का भव्य स्वागत किया था।

अशोक धर्मराज यानि कि चक्रवर्ती धर्मराज के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। इस धर्म-विजय के विषय में अशोक ने स्वयं लिखा है — "देवानामप्रिय धम्म द्वारा हुए विजय को वास्तविक समझता है। यहाँ तक कि 600 योजन दूर के देशों में भी देवानामप्रिय को यह विजय मिली।"

साथ-साथ अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए भी प्रयास किये। उसी के समय में पाटलीपुत्र में तृतीय बौद्ध सभा हुई थी। योगेन्द्र मिश्र का कहना है कि अशोक के प्रचार ने बौद्ध धर्म को विश्वधर्म में परिवर्तित कर दिया। यद्यपि अशोक का धर्म (धम्म) बौद्ध धर्म नहीं था, फिर भी जब उसके प्रचारक बाहर गये होंगे तब वहाँ वालों ने उन्हें बौद्ध ही समझा होगा। फलतः यहूदी धर्म और ईसाई धर्म पर बौद्ध धर्म का जो प्रभाव पड़ा, उसका श्रेय कुछ अंशों में अशोक को दिया जा सकता है।

निष्कर्ष → इस प्रकार अशोक ने धार्मिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किये। उसने मानवोचित गुणों के विकास के पालन पर जोर दिया जिससे मानव कल्याण हो सके। अशोक के धम्म की अपनी विशिष्टता है। वह जीवन के व्यावहारिक पहलू पर जोर देता था। नागरिकों में सामाजिक नैतिकता का विकास करना चाहता था।

भारती कुमारी
AT: HISC
13-04-2021

Scanned with CamScanner